ग्रंथमाला 'धर्म' : खंड ४

दर्शन, स्मृति एवं पुराण

भूमिका

सिकंदरने, हिन्दुस्थानपर चढाई करनेके लिए प्रस्थान करते समय, ग्रीक दार्शनिक अरिस्टॉटलसे पूछा, ''युद्धके पश्चात लौटते समय मैं आपके लिए कौन-सी बहुमूल्य वस्तु लाऊं ?' इसपर वे बोले, 'मुझे केवल गंगाजल चाहिए और जिसने हिन्दुस्थानको इतना वैभव प्राप्त करा दिया, वे तत्त्वज्ञानसंबंधी ग्रंथ चाहिए !' अनेक पश्चिमी विद्वानोंने हिन्दू धर्मग्रंथोंका गुणगान किया है । इससे भी हिन्दू धर्मग्रंथोंकी महत्ता ज्ञात होती है । धर्मग्रंथों की महत्ता ज्ञात होनेपर धर्मग्रंथोंपर और इनके माध्यमसे धर्मपर श्रद्धा दृढ होती है ।

ईश्वरप्राप्तिकी अनुभूति कराना, धर्मका अंतिम साध्य है । यह अनुभूति होनेके लिए आत्मा-जगत्-ईश्वर इत्यादि संबंधी तात्त्विक विचारोंका ज्ञान होनेके साथ-साथ धर्मनियमोंके अनुसार आचार-विचार, कर्तव्यकर्म आदि धर्माचरण संबंधी ज्ञान पहलेसे होना आवश्यक होता है । धर्मग्रंथोंसे इन दोनों बातोंका ज्ञान होता है ।

उपर्युक्त उद्देश्य ध्यानमें रखकर इस ग्रंथमें दर्शन, स्मृति और पुराणोंके विविध अंगों-उपांगों का विस्तृत विवेचन किया गया है । 'धर्म का निश्चित अर्थ क्या है', यह समझने के लिए इस विषयका सैद्धांतिक विवेचन, 'धर्म' नामक ग्रंथमें किया गया है ।

'प्रस्तुत ग्रंथ पढकर अधिकाधिक लोग धर्मपरायण बनकर ईश्वरप्राप्तिके पथपर आगे बढें', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! **- संकलनकर्ता**

हिन्दुओंके अधःपतनका मुख्य कारण है - धर्मके विषयमें अज्ञान !
- (सद्गुरु) डॉ. चारुदत्त पिंगळे, मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति

अध्याय १

अनुक्रमणिका

१. **व्युत्पत्ति एवं अर्थ** १६

२. **विषय** १७

२ अ. लौकिक दृष्टि २ आ. लोकान्तर दृष्टि १७

२ इ. लोकोत्तर दृष्टि १७

३. **उद्देश्य एवं महत्त्व** १७

४. **सिद्धान्त** १८

५. **विशेषताएं** १९

५ अ. तर्कका आधार ५ आ. सदेह मुक्तिका मार्ग १९

६. **संख्या** १९

७. **इतिहास** २०

८. **प्रकार** २१

८ अ. आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन २१

८ आ. वैदिक (आस्तिक) दर्शन (न्याय, वैशेषिक इत्यादी) २२

८ इ. वेदानुकूल (आगमिक) दर्शन २६

८ ई. अवैदिक (नास्तिक) दर्शन (बौद्ध, जैन एवं चार्वाक दर्शन) २७

९. **साधना (श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन)** २८

ईश्वरप्राप्ति हेतु उचित साधनासंबंधी मार्गदर्शक सनातनके ग्रंथ !

साधना (सर्वसामान्य जानकारी व महत्त्व)

- धर्माचरणको साधनाकी जोड देना आवश्यक क्यों ?
- सकाम की अपेक्षा निष्काम साधना महत्त्वपूर्ण क्यों ?

अध्याय २

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।)

१. अर्थ ३१

२. धर्मशास्त्र ३१

३. विषय ३२

४. आवश्यकता ३२

५. महत्त्व ३५

६. विशेषताएं ३६

७. संख्या ३६

८. स्मृतियोंमें भिन्नता ३७

९. महत्त्वपूर्ण स्मृतियां ३८

१०. प्रमाण ३८

१० अ. युग एवं स्मृतिप्रमाण ३८

११. वेद (श्रुति) एवं स्मृति ३८

१२. धर्मशास्त्र एवं योग ४०

१३. स्मृतिग्रंथ ४०

* मनुस्मृति * याज्ञवल्क्यस्मृति * रामायण * योगवासिष्ठ ४०

* महाभारत * भगवद्गीता * भागवतपुराण * प्रस्थानत्रयी ४६

१४. ग्रंथकार ६०

* महर्षि व्यास * वैशंपायन एवं याज्ञवल्क्य ६०

* यास्काचार्य * सायणाचार्य * अन्य भाष्यकार ६६

* जगद्गुरु श्री शंकराचार्य ६६

* मठस्थापना * महानुशासन * समाज एवं आचार्य ६८

* तत्त्वज्ञान * विशेषताएं * आचार्यकी ग्रंथसंपदा ७१

अध्याय ३

अनुक्रमणिका

१. **अर्थ** ७९

२. **महत्त्व एवं विशेषताएं** ७९

३. **विषय** ८१

३ अ. सर्ग ८१

३ आ. प्रतिसर्ग अथवा प्रलय ८१

३ आ १. नैमित्तिक प्रलय ८१

३ आ २. प्राकृत प्रलय ८१

३ आ ३. आत्यंतिक प्रलय ८१

३ आ ४. नित्य प्रलय ८२

३ इ. मन्वंतर ८२

३ ई एवं ३ उ. वंश और वंशानुचरित ८२

४. **सीख** ८३

५. **त्रिगुणोंके अनुसार प्रकार** – सात्त्विक, राजसिक, तामसिक ८३

६. **महत्त्वपूर्ण पुराण (महापुराण)** ८३

७. **मर्यादा** ८४

८. **उपपुराण** ८५

सनातनकी दृश्यश्रव्य-चक्रिका वर्षारंभदिन

- चैत्र प्रतिपदा ही मानवका खरा वर्षारंभ क्यों ?
- ध्वजारोपण कब / कैसे करें और उतारें ?
- नववर्षारंभके दिन दूधका सेवन क्यों न करें ?

विविध धार्मिक कृत्य धर्मशास्त्रानुसार कर ईश्वरीय चैतन्यका लाभ पाएं !